IJAER/July-August 2016/Volume -5/Issue-1/Article No-1/ 01-9 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

# "प्रागैतिहासिक काल एक विरासत एक कला"

**Dr. Akhilesh Sharma**
Supervisor
NAS College, Meerut

**Km. Meenakshi**
Research Scholar
NAS College, Meerut

कला मानव की उन भावनाओं के स्रोतों से उत्पन्न होती है। जहॉ किसी प्रकार की मलिनता नहीं होती, मानव की रचनात्मक षक्ति अपने और प्रकृति के बीच हुई उत्पन्न भावना के अनुभवों की अभिव्यक्ति है तथा कला समूह या किसी एक व्यक्ति से सम्बन्धित न होकर सम्पूर्ण मानव जाति की मानसिक क्रिया है। और इसके उद्भव की प्रक्रिया बेहद रोमांचक है। प्रष्न यह है कि यह जन्मजात प्रवृत्ति है। मानव भी ऐतिहासिक विकास से उत्पन्न है। बाहरी संसार से पूर्णतया अन्तराल में तादात्मय और एकात्मक होने पर ही कला का उदय होता है। "मानव के उद्भव का इतिहास पृथ्वी के निर्माण एवं विकास से जुड़ा है, क्योंकि वैज्ञानिकों की अनेक खोजों के अनुसार पृथ्वी करोड़ों वर्ष सूर्य के एक टुकड़े के रूप में है। इसके धीरे–धीरे ठण्डा होने पर कीट, पतंग, मछलियॉ, जानवरों आदि का अभिर्भाव हुआ। कलाक्रम के चक्र में उनकी आकृति एवं बनावट में भी अनेक अंतर आये। पाषाण काल मानव सभ्यता का आदि काल माना जाता है। आदि मानव ने अपनी सुरक्षा, षिकार के लिए अनेक प्रकार की वस्तुओं जैसे–पत्थर, लकड़ी, हड्डी आदि का प्रयोग किया होगा। लेकिन पत्थर के अतिरिक्त अधिकांष वस्तुएं अल्पकालिक हैं। प्रागैतिहासिक के सन्दर्भ में प्रस्तर उपकरण शब्द का उपयोग ऐसे पत्थरों के लिए किया जाता है। जिसका प्रयोग आदिमानव ने किया है। इन पत्थरों पर आदिमानव की कारीगरी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जब मानव नग्न अवस्था में, वनों में अपने पेट की आग बुझाने के लिए इधर–उधर भटकता रहता था, किन्तु उस समय भी उसमें कला के प्रति रुचि थी। इसका ज्ञान उस काल के बने हुये औजारों, हथियारों आदि को देखने से स्वत ही हो जाता है। उस काल का मानव पत्थरों के बने औजार अपने षिकार को मारनेप के लिए प्रयोग करता था। तथा आदिमानव ने वनों में अपना जीवन यापन करने के लिए अनेक प्रकार के प्रत्यत्न किये साथ ही सर्दी, गर्मी, वर्षा से सुरक्षित रहने के लिएभी अपने प्रयास व प्रयास के तरीके और जो कुछ वह प्रकृति से प्राप्त कर सकता था उससे व अपने अनुभवों से उस आदिमानव ने जो अभिव्यक्ति कला के माध्यम से की वो लय, सहजता क्या मानव होने का अभिमान, जीत का अहसास, खुषी, प्रकृति सब कुछ इन प्रागैतिहासिक कालिन चित्रों में नजर आता ळें

## प्रागैतिहासिक चित्रों की खोज

सर्वप्रथम संसार का ध्यान प्रागैतिहासिक चित्रों की और अल्टामीरा के चित्रमय गुपफाओं की खोज के बाद आकृष्ट हुआ, इससे पहले भारत में अजन्ता शैल चित्रों की खोज 1819 ई0 में हो चुकी थी। जिसमें सम्पूर्ण विष्व को अपने कलात्मक वैभव से चमत्कृत कर दिया।

स्पेन में अल्टामीरा गुफा के प्रागैतिहासिक चित्रों की खोज नितान्त आकस्मिक एवं अप्रत्याषित रूप से 1879 ई0 में हुई। एक षिकारी घोड़े पर सवार अपने कुत्ते के साथ शन्तिलाना के पास अल्टामीराकी ढलान की और चला जा रहा था, क्योंकि उसका षिकार गायब हो चुका था। कुछ दूर आगे बढ़ने के बाद उसे घोड़े के पीछे से आ रहे कुत्ते की आहट न मिली तो उसने पीछे मुड़कर देखा कुत्ता गायब था। षिकारी ने जोरदार आवाज लगाई, कुत्ते ने भौंककर जवाब दिया परन्तु षिकारी को लगा की जैसे आवाज किसी खोह से आ रही है। डरते हुए वह आवाज की ओर बढ़ा। उसे घनी झाड़ियों के पीछे छिपा पथरीला रास्ता दिखाई दिया। षिकारी ने पुन आवाज लगाई लेकिन गुफा में अन्दर जाने की हिम्मत न कर सका। तब तक कुत्ता दौड़ता हुआ आकर उसके पैरों में लौटने लगा। इसके बाद षिकारी ने अंधेरी गुफा के अन्दर जाना मुनासिब नहीं समझा और वहां से आ गया, और इस रहस्यमयी गुफा की कई जगहों पर चर्चा की परन्तु किसी ने इस षिकारी की बातों पर ध्यान नहीं दिया।

छः वर्षों के बाद मार्सेलीनों द सौतुओलाको इस गुफा की जानकारी एक गरीब मजदूर से मिली। मार्सेलीनों की पुराने ऐतिहासिक क्षेत्र में बहुत रुचि थी। और उस गुफा की खोज करने लगा तथा तब तक सालों की बरसात एवं बर्फ गिरने से उस गुफा का द्वार बन्द हो गया था। वह निराष नहीं हुआ और गर्मियों में वहां की जमीन साफ करनी शुरू

की। सफाई के दौरान उसे ढलान पर नाली सा कुछ दिखाई दिया वह उसे साफ करने में जुट गया। कुछ वर्षों की सफाई एवं खुदाई के बाद गुफा के द्वार का मलवा हटाया गया और सुरंग दिखाई पड़ी। मार्सेलीनों बहुत प्रसन्न हुआ, एक दिन वह अपनी नन्ही पुत्री मारिया के साथ लैम्प लिए गुफा के अन्दर घुसा, मारिया अपने पिता के कार्यों में बराबर दिलचस्पी लिया करती थी। दोनों पिता–पुत्री आगे बढ़े। गुफा सैंकड़ों गज गहरी थी। आगे चलकरमारिया की निगाहें जैसे ही उपर गई वह चिल्ला उठी, "पापा मीरा तोरोस पिन्ता दोसा" 'पापा उधर देखने लगा, जब मारिया की और नजर गई तो वह आष्चर्यचकित रह गया।

बगल की दीवार पर विषाल सांड सींग नीचे किये हुये रेखांकित था। वह चित्र संसार के आदिमानव द्वारा चित्रित किया गया था। इसके अलग अनेक चित्र चित्रित थे। इस प्रारमार्सेलीनों ने इस गुफा की खोज की। सूचना पुरातत्व एवं इतिहास के पंडितों के पास भेजना शुरू किया जिससे विष्व की चित्रकला के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया गया।

स्पेन की तहर ही फ्रांस में प्रागैतिहासिक चित्रों की सम्पदा प्राप्त हुई है। लास्को गुफा की खोज कथा अल्टामीरा घटनाक्रम से कम नहीं है। सन् 1940 ई0 में पहली सितम्बर को 5 लड़के अपने कुत्ते के साथ सैर को निकले अचानक उनका कुत्ता कही खो गया। उन्होंने आवाज लगाई समीप एक छेद से कुत्ते की आवाज सुनाई पड़ी। जब पॉचों ने छेद को चौड़ा दिया तो चित्रित गुफा के एक अलग संसार में जा पहुॅचे। लास्को गुफा लगभग 20 मीटर लम्बी तथा 9 मीटर चौड़ी है। जिसकी दीवार एवं छत पर अनेक पषु चित्र चित्रित है।

भारत में भी प्रागैतिहासिक चित्रों की खोज के पहले कई प्रमाण प्राप्त हो चुके हैं, जिनके द्वारा यह सिद्ध हो गया था कि संसार के सबसे प्राचीन आदिमानव यहां निवास करते थे। सर्वप्रथम मद्रास के निकट पल्लवरम नामक स्थान से रावर्ट ब्रुष फुट ने 13 मई, 1863 को एक प्रस्तर उपकरण खोज निकाला। नर्मदा और गोदावरी घाटों को देखने के बाद 1867 ई0 में अपना मत व्यक्त करते हुये कहा कि भारत वर्ष में मनुष्य का अस्तित्व यूरोप से कही अधिक प्राचीन है। यहां के स्क्रेपर पत्थर के नुकीले औजार, चाकू खोदने वाले लम्बे धारदार औजार तथा एक–एक गोल पत्थर जिसके बीच में एक छिद्र है आदि प्राप्त हुये। जिन्हें पूर्व पाषाण युग का माना गया है। इस प्रकार ज्ञात तथ्यों के आधार पर भारत के प्रागैतिहासिक चित्रों की और सर्वप्रथम ध्यान आकर्षित करने का प्रथम श्रेय अर्चिबाल कार्लाइल तथा जॉन का कर्बन को दिया जाता है। इसलिए अध्ययन की सुविधा के लिए निम्न तीन खण्डों में विभाजित कर सकते हैं

1. पूर्व पाषाण काल
2. 30,000 ईसा पूर्व से 25,000 ईसा पूर्व तक

2. मध्य पाषाण काल

25,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व तक

3. उत्तर पाषाण काल

10,000 ईसा पूर्व से 5,000 ईसा पूर्व तक

जैसे–जैसे समय व्यतीत हुआ मानव ने अपनी अमूर्त भावना को मूर्त रूप प्रदान करने की प्रवृत्ति के कारण जिसमें जादू, टोना, टोटका आदि भी आते हैं। और मानव गुफाओं की खुरदरी दीवारों तथा फर्ष पर चित्र चित्रित करने लगा, इस समय मनुष्य ने विषेष रूप से पत्थर, लकड़ी तथा मिट्टी का प्रयोग किया।

उत्तर पाषाण काल में मनुष्य पत्थरों के यन्त्रों पर पॉलिष करता था। कुछ स्थानों पर हिरौजी का रंग के रूप में प्रयोग किया जाता था। बेलारी सहित कई स्थानों पर पत्थर रेखाओं को खोदकर चित्र बनाये गये। उत्तर पाषाण काल में मानव की सर्वप्रथम चित्रकला का प्रयोग हुआ है।

– इस प्रकार भारतीय प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला के उदाहरण विभिन्न स्थानों में सुरक्षित है जो निम्न हैं–

– मिर्जापुर क्षेत्र 'उत्तर प्रदेष'

गुफा चित्रों के प्रसंग में इस क्षेत्र का महत्व सर्वाधिक है।

कैसूर की पहाड़ियां जिनमें भारतीय गुफा–चित्र लक्षित किये गये हो और इसी क्षेत्र में स्थित है। लिखनियां 2 में गुफा की भीतरी छत और भित्ती पर अंकित विविध आखेट–दृष्यों, पषु चित्रों तथा नर्तन–वादन आदि के आलेखनों से आदिम निवासियों की कला प्रियता और सौन्दर्य बोध का सजीव परिचय मिलता है। सोरहो घाट क्षेत्र के चित्रों में आखेट, हाथ की छापे मानव कृतियां और पषु चित्र अंकित है। कोहबर का षिलाश्रय 18 फीट उॅचा 64 फीट लम्बा और 31 फीट गहरा है। यहां भीतरी छतों में आलेखन है। विजय गढ़ के समीप गैंडे के अनेक चित्र बने हैं। मिर्जापुर के सुप्रसिद्ध पिकनिक स्थल विढम में भी अनेक षिला चित्र है। चित्र खुले स्थानों में होने के कारण धुंधले हो गये हैं। कुछ विषेष क्षेत्र निम्नलिखित हैं।

–बांदा क्षेत्र 'उत्तर–प्रदेष'

इन चित्रों में प्राय तीरकमान लिए हुए घुड़सवार चित्रित है। एक बिना पहिये की गाड़ी में बैठा व्यक्ति अंकित है। अष्वारोहियों के चित्रों में अष्वों के चौकोर गर्दन के एक जैसे बाल एक समान वस्त्र, आभूषण एवं षिरोभूषण पहने अष्वारोही चित्रित है।

रायगढ़ क्षेत्र 'मध्य–प्रदेष'

सिहानपुर का वर्णन विद्वानों द्वारा विषद रूप में किया गया है। यहां के चित्र लाल गेरूए रंग से अंकित है किन्तु षिलाओं के अपने रंगों तथा कालगत–क्षीणता के कारण उनके बहुरंगी होने का भ्रम होता यहां अनेक समूह चित्र भी है। कबरा में क्षेपांकन चित्र भी है। यहां भी समस्त चित्र गेरूए लाल रंग में अंकित है।

## पंचगढ़ी क्षेत्र 'मध्य–प्रदेष'

इस क्षेत्र को पंचमढ़ी सम्भवत इसलिए कहा जाता है। कि लोक विष्वासानुसार यहां पाण्डवों ने पांच गुफाओं में निवास किया था। पंचमढ़ी के षिला चित्रों में अन्य प्रकार के चित्रण के अतिरिक्त सषस्त्र युद्ध दृष्यों की बहलता मिलती है। पंचमढ़ी में इनचित्रों को पुतरी कहा जाता है। और इनके मुख्य केन्द्रों को बड़ी पुतरीलेन तथा छोटी पुतरी लेन कहा जाता है। लष्करिया खोह में पषु–चित्र सितार, वादक, गर्दभ मुख देवता आदि भी विषेष स्मरणीय है। माड़ादेव में सिंह आखेट चित्र का दृष्य छत में इस प्रकार बना है कि गुफा में लेटकर ही इसे ठीक देखा जा सकता है। मोन्टेरीजा में पारिवारिक जीवनके दृष्य भी है। डोरोथी दीव में प्राय सफेद रंग के चित्र अंकित है। कुछ में लाल बाह्य रेखावली शैली का भी प्रयोग हुआ है। इनमें विषय एवं शैली की विविधता है।

## हीषंगाबाद क्षेत्र 'मध्य–प्रदेष'

–आदमगढ़ पहाड़ी के अनेक चित्रों में हलके पीले रंग वाले विषालकाय हाथी, दोहरी रेखाओं में चित्रत महामहिश'10 फीट लम्बा 6 फीट चौड़ा' पीले हाथी के षिरोभाग पर अंकित जिराफ ग्रुप आदि के चित्र विषेष उल्लेखनीय है। इन षिलाश्रय पर विभिन्न युगों एवं शैलियों में किये गये चित्रण के पांच छः स्तर एक साथ लक्षित है। एक षिलाश्रय पर प्राय दोहरी रेखाओं द्वारा मयूर का चित्र भी अंकित है। अन्य स्थानों पर वनदेवी की सी आकृत्ति बनी है।

## भोपाल क्षेत्र 'मध्य प्रदेष'

नयापुरा, बरखेड़ा, वैरागढ़, भीम बैठका, धरमपुरी सांची उदयगिरि आदि। यहां के चित्र गेरुए एवं श्वेत रंग में अंकित किये गये है। इस क्षेत्र के सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण चित्र भोपाल से 40 किमी दक्षिण में भीम बैढका नामक स्थान की प्राकृतिक गुफाओं में मिले हैं। हाथी, अष्व, गेंड़ा, चीता, जंगली गाय, आखेट, नृत्य एवं व्यवस्थित सामूहिक जीवन का अंकन हुआ है। ''श्री वाकठाकर के अनुसार यहां के चित्र आठ–दस हजार वर्ष प्राचनी है।''

इस प्रकार आज का मानव आदिमानव का सुधरा रूप है। कलाक्रम में आकृति एवं बनाव में अनेक अन्तर आये हैं। इन प्रागैतिहासिक चित्रों में एक महत्व की बात दिखाई पड़ती है। किये चित्र प्रारम्भिक लोक कला को उद्भीत करते हैं। वे उस समय के जनजीवन और रीति–रिवाज, आचार–विचार–व्यवहार को सम्यक रूप से व्यक्त करते हैं जो आदि मानव की मुखर कहानी कहते हैं और उनके क्रमिक विकास की व्याख्या करते हैं।

## सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची


1. भारतीय चिकत्रला का विवेचन (कला विलास), 2009 – डा0 आर0ए0 अग्रवाल।
2. कला और कलम, भारतीय कला का आलोचनात्मक इतिहास, 2012 – डा0 गिर्राज किषोर अग्रवाल।
3. भारतीय इतिहास, नई दिल्ली – संजय कुमार सिंह।
4. भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेली – डा0 अविनाश वर्मा।
5. भारतीय चित्रकला का विवेचन (कला विलास), 2009 – डा0 आर0ए0 अग्रवाल
6. भारतीय इतिहास, नई दिल्ली – संजय कुमार सिंह।
7. भारतीय चित्रकला का इतिहास, बरेलद – डा0 अविनाश बहादुर वर्मा।
8. भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास – डा0 लोकेष चन्द शर्मा।
9- कला त्रेमासिक – राज्य ललित कला एकादमी।